प्राक्कथन

भारतीय संगीत शताब्दियों की विकासात्मक अमूल्य देन है । प्राचीन समय से ही संगीत हमारे आध्यात्मिक और भौतिक जीवन का अनिवार्य अंग रहा है । "आवश्यकता आविष्कार की जननी है ।" आज के वैज्ञानिक युग में प्रत्येक विषय की ओर देखने की प्रबुद्ध वर्ग की दृष्टि बदल गई है । प्रत्येक विषय का विशद विश्लेषणात्मक शोधकार्य हो रहा है । भारतीय संगीत, साहित्य, कला व संस्कृति जिस गति से उन्नति की ओर अग्रसर हो रही है उसका श्रेय ज्ञान के क्षेत्र में होने वाले नवीन शोध के परिणामों को जाता है । शोध एक निरंतर चलने वाली वह प्रक्रिया है, जिसका प्रत्येक चिंतन हर बार नई दिशा, नई उपलब्धि से अवगत करवाता है । संगीत के अनेक पक्षों पर शोध कार्य हो रहे हैं तथा शोध कार्य की आवश्यकता अनिवार्य होती जा रही है । शोध की प्रवृत्ति का क्यों और किन कारणों से निरन्तर बढ़ना जारी है, इसी को ध्यान में रखकर शोधार्थी द्वारा 'संगीत में शोध की प्रवृत्ति - एक अनुशीलन' के रूप में प्रस्तुत शोध विषय का चयन किया गया है । संगीत में नए शोध-प्रबंधों की प्रस्तुति में समस्याएं आना स्वाभाविक ही है तथा इन्हीं समस्याओं के कारण शोध प्रवृत्ति जटिल हो जाती है । प्रत्येक शोध प्रक्रिया का प्रारंभ शोध कार्य की जिज्ञासा तथा उसके प्रति अभिरूचि से होता हे जो आभ्यांतरिक होती है । अन्त में समस्याओं का निराकरण से आगे चलकर शोधकार्य एक निश्चित दिशा में बढ़ता और सम्पन्न होता है ।

शोधार्थी द्वारा 1988-89 में एम. फिल. में 'संगीत में शोध व उसकी समस्याएं' विषय पर लघु-शोध प्रबंध प्रस्तुत किया गया था । संगीत में बढ़ती हुई प्रवृत्ति व समस्याओं में आए परिवर्तनों को जानने की इच्छा जागृत होने पर, अपनी तीव्र इच्छा को सामने रखते हुए, संगीत में शोध की प्रवृत्ति-एक अनुशीलन' विषय को शोध प्रबंध का रूप देने पर प्रयास किया गया है ।

विषय चयन

संगीत आज सर्जनात्मक कला के दायरे से आगे बढ़कर अध्ययन का विषय बन चुका है । आज ज्ञान का प्रसार बहुत तेजी से हो रहा है, इसके साथ अनेक समस्याएं भी उत्पन्न हो रही हैं जिनके निदान के लिए अनवरत शोध कार्य होना अत्यंत आवश्यक है । संगीत में शोध की बढ़ती हुई प्रवृत्ति व होने वाली समस्याओं को जानने के लक्ष्य को ध्यान में रखकर "संगीत में शोध की प्रवृत्ति - एक अनुशीलन" विषय शोध प्रबंध के लिए प्रस्तावित किया गया है । यह विषय अपने में रूचिकर होने के साथ ही शोध की अनेक संभावनाओं से युक्त है ।

शोधकार्य मुख्य रूप से निम्नलिखित लक्ष्यों को सम्मुख रखकर प्रस्तुत किया गया है । प्रस्तुत शोध प्रबंध को सप्त भागों में विभाजित किया गया है । प्रथम परिच्छेद के अर्न्तगत विषय उपस्थापन में संगीत का महत्व व उद्देश्य, शोध विषय का उद्देश्य, विषय का परिसीमन आदि का वर्णन है तथा शोध एक अध्ययन में शोध के प्रेरक तत्व, शोध की विधियां, संगीत में शोध का महत्व एवं आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है । द्वितीय परिच्छेद में संगीत में शोध की प्रवृत्ति व संगीत में शोध के क्षेत्रों को उजागर किया गया है । तृतीय परिच्छेद में तथ्य सामग्री संकलन की प्रविधियां व स्रोतों को प्रस्तुत किया गया है । चतुर्थ परिच्छेद में समस्याओं की उत्पत्ति, स्रोत, प्रकारों तथा समस्याओं से प्रभावित शोधार्थियों के वर्गों को उल्लिखित किया गया है । पंचम परिच्छेद में एकत्रित दत्त सामग्री का संकलन तथा विभिन्न क्षेत्रों के शोधकर्त्ताओं की शोध प्रवृत्ति के कारणों व प्रश्नावली में लिखित समस्याओं के उत्तरों के परिणामों को सारिणी द्वारा दर्शाया गया है । षष्ठ परिच्छेद में प्रश्नावली व साक्षात्कार द्वारा एकत्रित दत्त सामग्री का विश्लेषण व प्रश्नावली में लिखित प्रवृत्ति के कारणों व समस्याओं के प्रतिशत परिणाम व निष्कर्ष दिए गए हैं । सप्तम परिच्छेद में "संगीत में शोध की प्रवृत्ति-एक अनुशीलन" से सम्बंधित सम्भावित सुझाव दिए गए हैं तथा अन्त में उपसंहार दिया गया है ।